IV. कसायपाहुड का प्रतिपाद्य/विषय पर प्रकाश डालें।
or कर्म सिद्धान्त के अन्तर्गत कषायों का विवेचन करें।

Ans- कर्म साहित्य में कर्म के स्वरूप और उसके फल देने की प्रक्रिया का निरूपण रहता है। बताया गया है कि जीव का प्रत्येक कर्म अपना बुरा या अच्छा संस्कार छोड़ जाता है अतः प्रत्येक कर्म या प्रवृत्ति के मूल में राग और द्वेष रहते हैं। यद्यपि प्रवृत्ति या कर्म क्षणिक होता है पर उसका द्रव्य भाव जन्य संस्कार फल काल तथा स्थायी रहता है। संस्कार से प्रवृत्ति और प्रवृत्ति के मूल में राग और द्वेष रहते हैं। यद्यपि प्रवृत्ति या कर्म क्षणिक होता है, पर उसका द्रव्य-भाव जन्य संस्कार फलकाल तक स्थायी रहता है। इसी का नाम संसार है।

कसाय व्यक्ति के मनोभावों का एक संपूर्ण विज्ञान है, इसके अन्तर्गत व्यक्ति का व्यक्तित्व का विश्लेषण उसके मनोगत भावों की जटिलताओं के सूक्ष्मता परिदृश्य में किया जाता है। इस विश्लेषण का आधार गणितीय है। इसलिए इस कर्म सिद्धान्त 'कसाय' के गणितीय विश्लेषण के माध्यम से किया गया है।

कसाय पाहुड का प्रतिपाद्य विषय जैन श्रमण परम्परा के कर्म सिद्धान्त के अन्तर्गत कषायों का विवेचन बहुत सुन्दर ढंग से हुआ है। जयधवला टीका के अनुसार कषायपाहुड सोलह हजार पद प्रमाण था, जिसे आचार्य गुणधर ने एक सौ अस्सी गाथाओं में उपसंहृत किया। टीकाकार के अनुसार कषायपाहुड की उपलब्ध सभी दो सौ तेतीस गाथाएँ तथा सूत्रिका गाथाएँ कषायपाहुड का अंग है। और सभी गुणधरकृत है।

प्रथम गाथा में बताया गया है कि पाँचवें पूर्व की दसवीं वस्तु में पेज्जपाहुड नामक तीसरे अधिकार में यह कसाय-पाहुड है। इस प्रकार इस गाथा में ग्रंथ का आधार निर्दिष्ट है।

दूसरी गाथा में कहा गया है कि इसमें 15 अधिकारों में 180 सूक्त गाथाएँ है। जिसमें पेज्ज दोस विभक्ति, स्थिति विभक्ति, अनुभाग-विभक्ति, बंधक अर्थात बन्ध और संक्रम, आदि है। वेदक अधिकार में नव, उपयोग में बारह, चतुःस्थान में सोलह तथा व्यंजन नामक अधिकार में पाँच गाथाएँ है।

कषाय के मूलतः चार भेद बताये गये है- क्रोध, मान माया, लोभ। इनकी प्रवृत्ति राग-द्वेष के रूप में होती है। किस कषाय की प्रवृत्ति कहाँ राग के रूप होगी और कहाँ द्वेष रूप इसका विचार से विश्लेषण किया गया है। इस प्रकार पेज्ज शब्द में

Scanned with CamScanner